Vol 2 Issue 7 Aug 2012

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 7, Aug 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

कबीर के सामाजिक विचारों का अनुशीलन

भगवान आदटराव

संतोष भीमराव पाटील महाविद्यालय , मंद्रुप, तह. द. सोलापुर, जि. सोलापुर.

सारांश:

हिन्दी भक्तिकाव्य के सन्त –कवियों में कबीर का स्थान सर्वोपरि है। उनके काव्य में रहस्य भावना समाज–सुधार तथा भक्ति का अद्‌भुत संगम है। यद्यपि कबीर काव्य का मुख्य लक्ष्य अध्यात्म्य विचार है, कवितारचना या समाज सुधार नहीं, तथापि उनकी वाणी में तत्कालीन समाज का चित्र अपने यथार्थ रूप में अंकित हुआ है। इतना ही नहीं कबीर ने अपनी वाणी में अपनी सामाजिक विचार–धारा को भी व्यक्त किया है इसीलिए कबीर को समाज–सुधारक भी कहा जा सकता है। हिंदी के कुछ विद्वानों ने उनको प्रगतिशील, मानवतावादी तथा क्रांतिकारी भी कहा है। कबीर ने समसामायिक समाज में प्रचलित भ्रष्टाचार, अंधविश्वास और मिथ्या प्रदर्शनों पर तीव्र प्रहार किया है। कबीर इसे अपना कर्तव्य समझते थे। राम के दीवाने कबीर ने समाज–सुधारक न बनना चाहते हुए भी समाज– सुधारक का पद प्राप्त कर लिया है।

प्रस्तावना :–

इस की सातवीं–आठवीं शताब्दी तक आते–आते बौध्द धर्म वज्रयान का तंत्रवाही रूप धारण कर चुका था! सिध्द और योगी बौध्द धम्मा के ध्वंसाशेषों के रूप में तारा, कृत्य आदि तांत्रिक पूजा द्वारा जनता पर अपना प्रभाव डाल रहे थे। समाज में अन्ध विश्वासों का साम्राज्य था। इन तांत्रिको का विशेषकर बौध्द कवि–सरहपा, चूणिया, करेडिया आदि महात्माओं ने अपनी व्यक्तिगत साधना के बल पर धार्मिक और सामाजिक कांति का बीजारोपण किया था। इन्हे हिंदी का आदिकवि माना जाता है। इन कवियों ने काव्य भाषा संस्कृत का त्याग कर जनभाषा अपभ्रंश मिश्रित हिंदी में अपनी वाणी मुखरित की थी। इन संतो पर भी बौध्द वज्रयान का प्रभाव था। ये सभी अशिक्षत थे लेकिन इनका ऐतिहासिक मूल्य महत्त्वपूर्ण है। इन्हीं की परंपराओं का विकसित रूप गोरखनाथ के नाथ संप्रादाय में और व्यापक तथ्य पुष्ट रूप निर्गुणमार्गी ज्ञानाश्रयी शाखा में पाया जाता है। उसमें विद्रोही के रूप में संत कबीर हमारे सामने आते हैं।

गोरखनाथ ने मूर्तिपूजा, तंत्रवाद, आदि का खंडन कर एकेश्वरवाद की स्थापना की थी। हठयोग इनका सहयाग पाकर पल्लवित हुआ था। इन रहस्यवादी नाथें में जालंदर, कणेरीनाथ, चरपटनाथ आदि प्रसिध्द विद्राही संत थे। इन्ही की पृष्ठभूमि संत कबीर ने एक नवीन सांस्कृतिक चेतना का संचालन किया था। इस चेतना का आदि स्त्रोत सर्वथा नवीन नहीं था। बौध्द धर्म के उदय के साथ ही उच्चवर्गीय सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक अत्याचारों के प्रति विद्राह की भावना का जन्म हो चुका था। संत कबीरजी ने इस भावना में आत्मविश्वास की दृढ़ता फूंकी, उसे बंधनो से मुक्त किया, हिनता की भावना को दूर कर समता की दृष्टि दी, इस प्रकार संत कबीर हिंदी साहित्य के इस जागरण काल के अग्रदूत बने।

संत कबीर ने नाथ संप्रदाय की नीरसता को दूर कर दिया। अव्यावहारिकता के कारण धीरे – धीरे नाथपंथ का भी ऱ्हास हो गया था। संत कबीर ने उसमे प्रेम और राग का मिश्रण कर उसे एक नवीन रूप दिया संत कबीर का काल प्रौढ संत मत का काल था। कबीर और उनके साथी तथा अनुयायी सभी सुधारवादी थे। कबीरजी ने बाह्याडंबरा का विराध कर एकेश्वरवाद का प्रचार किया। इसी कारण कबीरजी के मत पर एक और भक्ति योग लेखवाद के रूप में सिध्दों और नाथों का प्रभाव है, तो दूसरी ओर प्रेम की तीव्रता भक्ति और माधुर्य उपासना के रूप में सूफियों का तथा वैष्णवों की अहिंसा और प्रेम का प्रभाव है। कबीरजी ने हिंदू – मुस्लिम एकता का नारा बुलन्द कर मूर्तिपूजा और बहूदेववाद का

Please cite this Article as : भगवान आदटराव , कबीर के सामाजिक विचारों का अनुशीलन : Indian Streams Research Journal (Aug. ; 2012)

खंडन किया। सभी संत अक्खड थे। शुध्द मानवताप्रेमी होने के कारण उन्होने निर्भय होकर धार्मिक और सामाजिक विषमताओं पर निर्मम प्रहार किये थे। बुरायों की कटु आलोचना कर सदगुणों का उपदेष दिया था।

हिंदी साहित्य में संत कबीर जी का उचित मूल्यांकन न होने का एक कारण यह भी रहा है कि वे विद्रोही थे, सत्य के प्रेमी थे, असत्य पर प्रहार करते थे। साहित्य की सबसे बड़ी देन जीवन की मूल समस्याओं पर मौलिक रूप से विचार करने की प्रेरणा उत्पन्न करना है, कबीर साहित्य हमें यह प्रेरणा देता है। कबीर की प्रेरणा सत्य की साधना से है न की काव्य सौंदर्य दृष्टि से। इसी कारण सब लोगों को एकता के सूत्र मिल गया था। सांसरिक विषमता, आडम्बर, और भेदभाव के विरोध में संत कबीर ने सरल प्रेममय जीवन अपनाने का संदेश दिया था, यह उनकी सबसे बडी विशेषता थी।

संत कबीर के व्यक्तित्त्व के दो प्रधान पक्ष है, प्रथम धर्म सुधारक उपदेशक का तथा द्वितीय शुध्द भक्त का इसी के अनुसार उनपके काव्य के भी दो पक्ष हो गए हैं। धर्म सुधारक उपदेशक के रूप में उन्होंने जो कुछ कहा है, वह खंडन मंडन की भावना से ओत प्रोत होने के कारण नीरस, कर्कश भाषा में कहा है, उसमे विद्रोह है। वे बहुश्रुत थे, उनमें अनुभूति की तीव्रता मिलती है, उनकी बात सीधी हृदय पर चोट करती है, उनके हृदय में सच्चाई थी और ज्ञापन में बल था। इसी कारण उनकी वाणी में आग, विद्राह की भावना दिखाई देती है।

कबीर साधक थे, उनकी साधना के दो रूप थे, कर्मयोग और हठयोग। कर्मयोगी के समान वे संसान के माया मोह से निर्लिप्त रहते थे। उनकी कथनी और करनी में साम्य था। परंतु उन्होने संसार के संघर्ष से पलायन का उपदेषन कभी नहीं दिया वे उससे टक्कर लेने के समर्थक थे।

संत कबीर विद्रोह प्रकट करते हुए कहते हैं, केवल पुजा जप, स्नान करने से और मस्जिद में सिर झुकाने से क्या मिलनेवाला है? यदि हृदय में कपट छल बनाये रखे तो नमाज अदा करने तथा मक्के की यात्रा से भी क्या लाभ होगा? जप, तप, से किसका भला हुवा है, माला फेरने से कभी जग बदलने वाला नहीं हैं। इसके लिए मन का षांत होना, मन में पवित्रता होना आवश्यक है, इस प्रकार के विचार प्रकट करनेवाले विद्रोही संत कबीरजी अकेले थे।

''हिंदू बरत एकादशी चौबिस तीस रोजा मुसलमाना।
ग्यारह मास कहो किन किन टोरे, एक महिना आना।।''

कबीरजी कहते है, हिंदू लोग वर्ष में चौबीस एकादशी व्रत रखते है, और मुसलमान लोग रमजान महिने के तीस दिनों मे रोजा रखते हैं तो वर्ष में केवल एकही महिना पवित्र मानकर ग्यारह महिने किसने अपवित्र कर दिया उन्हे व्रत से अलग क्यों कर दिया? केवल यह सवाल संत कबीर जी ही पूछ सकते है। उन्हे अंधविश्वास पसंद नही था, वे हिंदू और मुस्लिम समुदाय को फटकारते थे। इसलिए उन्हे विद्रोही संत कहना सार्थक होता है।

''जो खुदाय महजीद बसतु है, और मुलुक केहि केरा।
तीरथ मूरत राम निवासी, दुइमा किंतू न हेरा।।

संत कबीर विद्रोह करते हूए कहते है, यदि खुदा मस्जिद में बसता है, तो मस्जिद के बाहर का मुल्क किसका है? और यदि तीर्थ मंदिर तथा मूर्तियों में ही राम निवास करता है, तो उनसे अलग फैले हुए विशाल संसार में कौन रहता है? इन हिंदू मुसलमानों में से किसी ने भी सत्य की खोज नहीं की इस बात की ओर सारे लोगों का ध्यान संत कबीर आकर्षित करना चाहते हैं।

''वेद कितेब कहा किन झूठा जो न विचारे।
सब घट एक–एक है– लेखे भय दूजा के मारे।।''

कबीर कहते हैं, वेद और किताब को किसने झूठा कहा है। झूठा तो वह है, जो बिना विचार किये वेद किताबों की रट लगाता है। कबीर के अनुसार मनुष्य को चाहिए कि वह सभी शरीरों में एक समान आत्मारूपी परमात्मा को देखे और दूसरों के दिल दुखाने एवं उनकी हत्या करने से भय करें तथा इस पाप कर्म से सर्वथा दूर रहे। जब मनुष्य पाप से बचता है, तो उसका जीवन सुखी बन सकता है, इस प्रकार का विचार कबीर प्रकट करते हैं,

पूरब दिशा हरी को बासा, पश्चिम अल्लाह मुकामा।
दिल में खेजि दिल हि माँ खोजो इहै करीमा रामा।।

कबीर पुछते है, हिंदू प्रायः पूर्व मुख करके पूजा करते है, और भारत वर्ष में मुसलमान पश्चिम मुख करके नमाज पढते हैं तो इससे यह कैसे मान लिया जाय की हरि पूर्व दिशा में बसता है और अल्लाह पश्चिम दिशा में? कबीर जी कहते है, हे मनुष्यों! अपने दिल में खोजों, तो पाओगे कि अपने दिल में रमनेवाला चेतन नूर ही दिलकश एवं दिल आराम रहीम और राम है।

कबीर को हिंदूओं की वर्ण व्यवस्था और ब्राह्मणों के मिथ्याभिमान से तीव्र घृणा थी। उन्होने अपनी साखियों

और पदों में इसकी तीव्र आलोचना की है और हँसी भी उडाई है। उनको किसी भी प्रकार का भेद भाव मान्य नहीं था। कबीर कहते हैं सभी प्राणी एक ज्योति से उत्पन्न हैं, तो फिर ब्राह्मन तथा शुद्र का अन्तर किसी भी प्रकार से उचित नहीं है। ''ज्योति से सब उत्पन्न, का बामन का सूदा।''

जाति–पाँति की कट्टरता कबीर सामाजिक हित के लिए विरोधी मानते हैं और भक्ति के क्षेत्र में तो इसे सर्वथा त्याज्य कहते हैं। इसीलिए कबीर कहते हैं– 'जात न पूछो साधू की, पूछ लीजिए ग्यान।'

ईश्वर भक्ति पर किसी एक जाति या व्यक्ति का अधिकार नहीं। जो ईश्वर का भजन करता है, वही भक्त है–

''जात पात पूछो नहीं कोय।
हरि कौ भजे सो हरि का होय।।''

कबीर हिन्दू और मुसलमान में भी कोई मौलिक अन्तर नहीं मानते। वे सभी मनुष्यों को एक समान समझते हैं। भगवान ने जन्म से न किसी को ब्राह्मण बनाया है न शुद्र न हिन्दू न मुसलमान। कबीर मानव मात्र की एकता को स्वीकार करते हैं।

धार्मिक सुधार और समाज–सुधार का घनिष्ट संबंध है। कबीर ने हिन्दू और इस्लाम धर्मों के पाखण्डों और अन्ध रूढियों का खण्डन किया है। एक और कबीर हिंदूओं की मूर्तिपूजा का खंडन करते है, तो दूसरी ओर मुसलमानों के नमाज, रोजा आदि पर व्यंग करते हैं।

वस्तुतः इस खण्डन पध्दति को अपनाकर कबीर ने लोगों को अंधविश्वासोंसे मुक्त करने का प्रयत्न किया था। कबीर ने जहाँ समाज और धर्म के पाखण्डों और अंधविश्वासों का खण्डन किया है, वहाँ समाजसुधार के लिए उन्होंने नैतिक आदर्शों का प्रतिपादन किया है। उन्होंने जहाँ काम, क्रोध, मोह, अहंकार आदि की निन्दा की है तथा कंचन, कामिनी आदि की भर्त्सना की है, वहाँ सत्य, दया, प्रेम, परापकार सत्संगति आदि का महत्त्व भी बतलाया है। परोपकार को वह सन्त (पीर) का पहला लक्षण मानते हैं। कबीर ईश्वर भक्ति के लिए प्रेम को महत्त्व देते हैं। वस्तुतः कबीर समदर्शी सन्त एवं महात्मा थे। 'लोहा कंचन सम करित जानै ते मूरत भगवाना' उनका आदर्श था। सभी प्रकार के ऊंच – नीच भेद–भाव अथवा वैषम्य से रहित व्यक्ति ही सच्चा समदर्शी हो सकता है और वही 'सत्य' के मार्ग पर चल सकता है। कबीर जिस मानवीय एकता के पक्षधर थे, उसमें धर्म एक है, राम–रहिम एक हैं। हिंदूर–मुसलमान एक हैं।

इस प्रकार कबीर को हम क्रांतिकारी, प्रगतिशील एवं मानवतावादी धर्म गुरू और समाज–सुधारक कह सकते हैं। कबीर ने समाज में क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी। धर्म के नाम पर किए गए अनाचार का विराध कर जनसाधारण की भाषा द्वारा समाज को जाग्रत करने में कबीर का स्थान सर्वप्रथम है।

संदर्भः–

1. कबीर ग्रंथावली– डॉ. श्यामसुंदर दास
2. कबीर काव्य में कालबोध – डॉ. सुमीता कुकरेती
3. बुध्द–कबीर–अम्बेडकर (एक ही विचारधारा के वाहक) – एस.एस. गौतम
4.कबीर : साधना और साहित्य– डॉ. प्रतापसिंह चौहान
5.कबीर साहित्य की परख – आ. परशुराम चतुर्वेदी

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net